"अनामिका की रचनाओं में युगबोध”

रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची की पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध विषय की रुप रेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. सूनीता कुमारी गुप्ता

सहायक प्राध्यापक

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग

रॉंची विश्वविद्यालय, रॉंची

सम्पर्क सूत्र-9470360436

शोध छात्र

बिरेंद्र कुमार शर्मा

(जे. आर. एफ)

विश्वविद्यालय हिंदी विभाग

रॉंची विश्वविद्यालय,रॉंची

सम्पर्क सूत्र-7739812311

प्रस्तावना

अनामिका आधुनिक रचनाकारो में से एक हैं जिनकी हर कृति का कैनवास बहुत विराट है, इनकी रचनाओं मे गहरे शोध की संभावना है।अनामिका को उनकी 'टोकरी मे दिगंत थेरी गाथा:' के लिए साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया है। अनामिका की रचनाओं में मुख्य विषय स्त्री मुक्ति है। यह स्त्री मुक्ति से लेकर देश मुक्ति तक का सफर तय करता है। भारतीय समाज मे प्राय: लिंग, जाति, व्यवसाय के कारण जो लोग उपेक्षित रहे हैं, उनके योगदान को अपनी रचनाओं द्वारा प्रकट किया है। उनकी रचनाओं मे समाज की बंदिशों मे जकड़ी हुई इंसानीयत की चीख है तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक तंतुओं के ताने-बाने को गहराई से समझने का सफल प्रयास है ।

अनामिका की रचनाओं में समाज के विविध पक्षों को लेकर चिंताएँ व्यक्त की गई हैं परंतु प्रमुख पक्ष स्त्री मुक्ति है।अनामिका की पहली रचना 'गलत पते की चिठ्ठी' कविता संग्रह है जो 1979 ई. मे प्रकाशित हुई है। पर इनकी 'टोकरी में दिगंत थेरी गाथा:' एवं 'दस द्वारे का पिंजरा' के लिए इन्हें अधिक ख्याति मिली।

व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग होता है । अत: कोई भी साहित्यकार, कथाकार अथवा कवि प्रथमत: व्यक्ति होने के नाते समाज का ही एक अंग होता है। समाज की एक इकाई या घटक के रूप में लेखक या लेखिका दिन रात जो अनुभूत करता है वह सब उस संवेदनशील हृदय-गह् वर में प्रवेश कर

साहित्य के रूप में प्रस्फुटित हो उठता है। युग परिवर्तन के साथ सामाजिक परिवर्तन का वह साक्षी होता है। इस बदलाव का सच हमें समकालीन साहित्य में देखने को मिलता है ।

अनामिका की रचना भी समकालीन समाज तथा उनके अंतर्मन को मुख्य रूप से अभिव्यक्त करती है। उनकी कृतियों का अध्ययन करते समय पाठक स्वयं उस परिवेश मे खो जाता है और उसको अपने साथ घटित घटनाएँ याद आने लगती है। लेखिका ने समाज के वास्तविक स्वरूप, सोच व मंतव्य को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है एवं उनकी रचनाओं में हमें साफ-साफ स्त्री संघर्ष और स्त्री मुक्ति की वर्तमान स्थिति दिखाई पड़ती है ।

आधुनिक युग में हमारे समाज में बहुत से परिवर्तन हुए हैं। अनेक प्राचीन मान्यताएँ टूटी हैं तथा कई नई मान्यताओं को जीवन में स्थान मिला है। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में घटित क्रांतिकारी परिवर्तनों के प्रभाव ने आधुनिक नारी को भी नई मानसिकता प्रदान की है । आज की नारी अपनी स्थिति के प्रति सजग है और वह अपनी सामर्थ्य पहचान कर आगे बढ़ रही है। आज नारी पुरुष के समान ही अपनी पहचान बनाने लगी है। आधुनिक समाज में नारी ने अपने ऊपर लम्बे समय से लगायी गयी मानसिकताओं को तोड़ा है। आज हर क्षेत्र में स्त्री-पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चलने का काम कर रही है।

आज के समाज में स्त्री की जो कल्पना की जा रही है वह पहले की स्त्री से बहुत कुछ अलग है । समय परिवर्तन के साथ- साथ वस्तुओं के मूल्य में भी

परिवर्तन हो जाता है। स्त्री की हर एक समस्या समाज की भी समस्या है। हमें स्त्री-पुरुष का सहजीवन सहज, आनंदमय और परस्पर पूरक बने इसका समाधान ढूंढना है। हमें परस्पर सहयोग पर आधारित परिवार बनाने का साधन खोजना है।

अनामिका की रचनाओं में नारी की प्रधानता है। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री मन की कुंठित इच्छाओं की अभिव्यक्ति की है। जीवन की नवीन परिस्थितियों के साथ समझौता न कर पाने के कारण आज स्त्री-पुरुष दोनों किस प्रकार असंबंद्धता,अजनबीपन एवं जीवन की विसंगतियों का अनुभव कर रहे तथा तनाव झेल रहे हैं ,इसका यथार्थ चित्रण अनामिका की रचनाओं में मिलता है ।

अनामिका के उपन्यास निम्नलिखित हैं -
अवान्तर कथा, दस द्वारे का पिंजरा, मन कृष्ण मन अर्जुन, तिनका तिनके के पास, बिल्लू शेक्सपीयर पोस्टबस्तर,आईना साज, पर कौन सुनेगा, तृन धरि ओट |

<u>शोध कार्य की प्रेरणा</u>

अनामिका की रचना पढ़ने में मेरी विशेष रुचि रही है। उनकी रचनाओं में स्त्री मुक्ति की स्वर प्रमुख है और साहित्य की प्रत्येक रचना की पूर्ति स्त्री के बिना असंभव है। स्त्री किसी न किसी रूप मे मौजूद रहती है किन्तु वह पराश्रित ही

रहती है। बचपन में पिता के, युवावस्था में पति के तथा वृद्धावस्था में पुत्र के हर जगह हर परिस्थिति में स्त्रियों को संघर्ष ही करना पड़ा है।अनामिका की इन्ही सब रचनाओं को पढ़ने के बाद मैं प्रभावित हो कर इन पर शोध करना चाहता हूँ। विषय-चयन के लिए अध्ययन के दौरान मैंने अनामिका का उपन्यास 'दस द्वारे का पिंजरा' पढ़ा। जिसमें पंडिता रमाबाई एवं ढेलाबाई के जीवन ने मुझे बड़ा प्रभावित किया। इसके बाद मैंने इनकी रचनाएँ पढीं जिनमें स्त्री-जीवन-संघर्ष को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया गया है। यहीं से मुझे "अनामिका जी की रचनाओं में युगबोध" विषय पर शोध करने की प्रेरणा मिली।

<u>शोध कार्य का उद्देश्य</u>

प्रस्तुत शोध विषय "अनामिका की रचनाओं में युगबोध" में मैं अनामिका की सम्पूर्ण रचनाओं का अध्ययन करना चाहता हूँ। इनकी रचनाओं में किस तरह इनकी स्त्री-पात्र संघर्ष करते हुए अंत में सफल भी होती हैं ,यह दिखाना मेरे शोध का विषय है । इनकी स्त्री पात्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए अंत में सफल हो जाती हैं । अनामिका ने अपनी कविता, उपन्यास एवं कहानियों में व्यक्ति और परिवार के माध्यम से अकेलापन, क्षणवाद, अतीत के मोह और कुंठाओं का खुला चित्रण किया है। मैं इस शोध कार्य में इनकी रचनाओं के माध्यम से स्त्रियों के संघर्ष को चित्रित करने का प्रयास करूँगा ताकि उनके उपन्यासों में चित्रित स्त्रियों के संघर्ष को समाज के सामने

उजागर कर सकूँ।

पूर्व अध्ययन एवं शोध कार्य

उपन्यास आधुनिक युग की गद्य विधा है। विधा के विकास की दृष्टि से यह युग उपन्यास के विकास का दौर है। आधुनिक युग में बहुत से लेखक,लेखिकाओं ने इसमें अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। विषय वस्तु की विविधता तथा शैली की विविधता ने उपन्यास को विशिष्ट बना दिया ।

प्रस्तावित शोध कार्य 'अनामिका की रचनाओं में युगबोध' को सामने लाने में यथा संभव भूमिका निभा सकूँगा । जहाँ तक मेरी जानकारी है मेरे द्वारा प्रस्तावित विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है। अत: मेरा यह शोध कार्य नितांत नवीन और मौलिक है।

साहित्य अवलोकन

शोध में साहित्य का अवलोकन महत्त्वपूर्ण होता है, तभी वह शोध कार्य प्रामाणिक माना जाता है। मेरे इस शोध कार्य में साहित्य अवलोकन पर विशेष ध्यान दिया जाएगा तथा चुने गये विषय पर हुए पहले के शोधों का अध्ययन करके नये तथ्य खोजने का प्रयास किया जायेगा ताकि मेरे द्वारा किये गये शोध में नवीनता और मौलिकता को प्रस्तुत किया जा सके तथा सही दिशा में काम हो सके ।

शोध विषय की प्रासंगिकता

अब तक अनामिका पर बहुत ही कम शोध कार्य हुए हैं । इस शोध कार्य से भविष्य में साहित्य के अनेक अनछुए पहलुओं पर अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया जा सकेगा। मेरे इस शोध कार्य के विषय की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी पहले थी क्योंकि स्त्री की मनोदशा आज भी काफी दयनीय है, उसे हर जगह अपने लिए संघर्ष करना पड़ता है। मेरे इस शोध कार्य से अनामिका की रचनाओं एवं स्त्री विमर्श के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।

शोध विषय का महत्त्व

हिन्दी साहित्य प्रारंभ से ही समाज के दर्पण के रूप में उपस्थित रहा है। साहित्य की विधाओं में कथा साहित्य एक महत्त्वपूर्ण विद्या है। प्रास्तावित शोध विषय का व्यापक महत्त्व है। प्रस्तुत शोध विषय से हिंदी में कथा साहित्य के आरंभ और विकास की जानकारी प्राप्त कर अनामिका की रचनाओं को और अच्छे से समझ सकेंगे।

शोधकार्य की अध्ययन पद्धति / प्रविधि

प्रस्तावित शोध कार्य का आधार वैज्ञानिक सर्वेक्षण पद्धति से होगा, जिसमें वास्तविक एवं प्रामाणिक तथ्यों का समावेश होगा। शोध कार्य का आधार विश्वसनीय तथ्यों, सूचनाओं आदि के आधार पर उसे प्रस्तुत करने की कुछ विधियाँ हैं । जैसे-

(1) सर्वेक्षण विधि

(2) साक्षात्कार विधि

(3) लेखों / आलेखों के माध्यम से

(4) सहायक सामग्री, पुस्तकालय, अवलोकन

(5)कथात्मक, विवरणात्मक एवं आलोचनात्मक

(6) इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री

तथ्य संकलन

(1) पत्र - पत्रिका

(2) लेख / आलेख

(3) इंटरनेट

(4) आधार ग्रंथ

(5) संदर्भ सूची

<u>शोध कार्य का ज्ञान विस्तार में प्रदेय</u>

प्रस्तुत शोध कार्य से ज्ञान विस्तार में वृद्धि होने का हर संभव प्रयास रहेगा। वास्तव अर्थ में अनुसंधान किसी भी क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना या विधिवत गवेषणा करना होता है।शोध कार्य में नवीन वस्तुओं की खोज तथा पुराने वस्तुओं एवं सिद्धांतों का पुन: परीक्षण किया जाता है जिससे कि नये तथ्य प्राप्त हो सके तथा जो ज्ञान के विस्तार में सहायक हों ।

<u>भविष्य मे शोध कार्य होने की संभावनाएँ</u>

भविष्य में प्रस्तुत शोध कार्य पर और भी कार्य होने की अनेक संभावनाएँ हो सकती हैं क्योंकि संभावनाएँ अनंत हैं। अत: शोध की गुंजाइश हमेशा रहती है। हमारी सोच जैसे ही एक नये शोध कार्य करने के लिए हमें प्रेरित करता है। वर्तमान में किया गया शोध ही भविष्य का आधार बनता है। इसलिए मैं इस शोध कार्य को नवीन और सार्थक बनाने का प्रयत्न करूँगा। इस शोध के द्वारा हम साहित्य के पुराने और नये तथ्यों का जब सत्यापन करेंगे तो शोध द्वारा प्राप्त जानकारी भविष्य के लिए लाभकारी होगी , जिससे कि इस शोध विषय

पर और भी शोध कार्य होने की संभावनाएँ बनी रहेंगी|

<u>शोध कार्य हेतु अध्यायीकरण</u>

विषय सूची

1. प्रथम अध्याय : अनामिका की व्यक्तिगत जीवन संघर्ष

1.1 अनामिका का जीवन परिचय

1.2 अनामिका का रचना-संसार

2. द्‌वितीय अध्याय : अनामिका की रचनाओं में चित्रित..साहित्यिक युगबोध

1.1 उपन्यासों में साहित्यिक युगबोध

1.2 कहानियों में साहित्यिक युगबोध

1.3 कविताओं में साहित्यिक युगबोध

3. तृतीय अध्याय : अनामिका की रचनाओं में चित्रित.. सामाजिक युगबोध

1.1 उपन्यासों में सामाजिक युगबोध

1.2 कहानियों में सामाजिक युगबोध

1.3 कविताओं में सामाजिक युगबोध

4. चतुर्थ अध्याय : अनामिका की रचनाओं में चित्रित..राजनीतिक युगबोध

1.1 उपन्यासों में राजनीतिक युगबोध

1.2 कहानियों में राजनीतिक युगबोध

1.3 कविताओं में राजनीतिक युगबोध

5. पंचम अध्याय : अनामिका की रचनाओं का शिल्प-विधान

1.1 वस्तु चित्रण

1.2 परिस्थिति अथवा परिवेश वर्णन

1.3 चरित्र-चित्रण

1.4 देश काल वर्णन

1.5 भाषा शैली

6.उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ

(क) आधार ग्रंथ

(ख) सहायक ग्रंथ

(ग) पत्र-पत्रिकाएँ

(घ) वेब सामग्री

(क) आधार ग्रंथ सूची

1. अनामिका, टोकरी में दिगंत-थेरी गाथा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2014

2. अनामिका, दस द्वारे का पिंजरा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008

3. अनामिका, तिनका तिनके के पास, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2008

4. अनामिका, लालटेन बाज़ार, राजपाल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, दिल्ली, 2019

5. अनामिका, आईना साज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2020

6.

(ख) सहायक ग्रंथ सूची

1. रुस्तगी, मंजु, अनामिका का काव्य, दिल्ली, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2015

2. सेठी, रेखा, स्त्री-कविता पक्ष और परिप्रेक्ष्य, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2019

3. सेठी, रेखा, स्त्री-कविता पहचान और द्वंद, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2019

4. कश्यप, अभिषेक, अनामिका एक मूल्यांकन, दिल्ली, सामायिक प्रकाशन, 2012

(ग) पत्र-पत्रिकाएँ

1. आजकल मासिक पत्रिका

2. जन संदेश टाइम दैनिक

3. हँस मासिक पत्रिका

4. जनकृति मासिक पत्रिका

5. संवेद

(घ) वेब सामग्री

1. समालोचना

2. कविता कोश

नोट:- इस शोध का प्रारूप अंतिम नहीं है भविष्य में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है।